

Vedic Vastu Shastra (Indian Architecture)

Online Program, 6th to 11th 2020



(१) १८ आचार्य

मत्स्यपुराण ग्रंथानुकूप वास्तुशास्त्र इस विषय पर ग्रंथ रचने वाले १८ आचार्य के नाम –

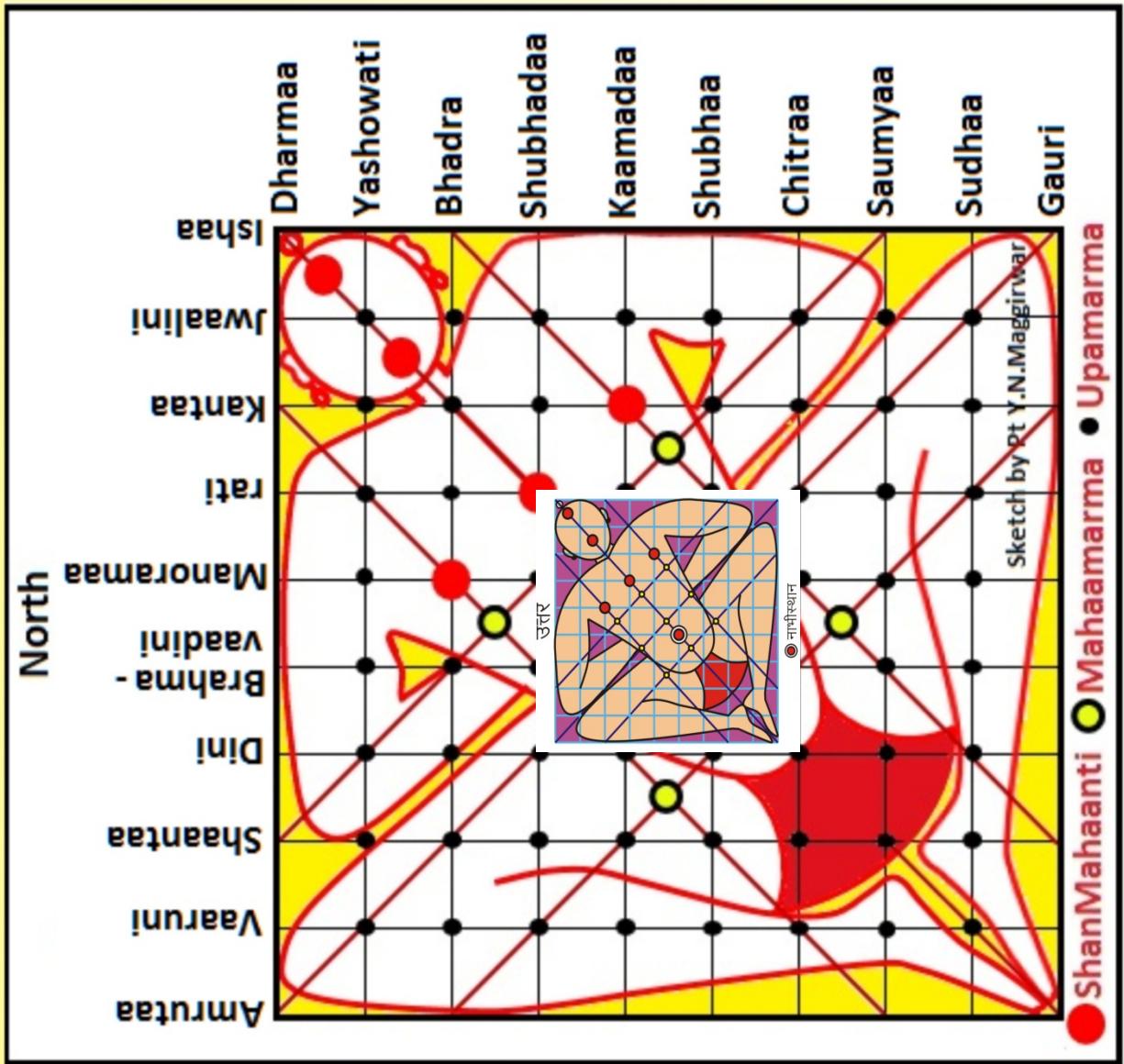
भृगुरत्रिवसिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा ।
नारदोनगनजिच्छैव विशालाक्षं पुरंदरः ॥२॥
ब्रह्माऽ कुमारो नन्दीशः शोनको गर्ग एव च ।
वासुदेवो अनिकद्वश्च तथा शुक्र बृहस्पती ॥३॥
अष्टादशैते विठ्ठाता वास्तुशास्त्रपदेशकाः ।

(मत्स्यपुराण - ३४.२५२)

भृगु (Bhrgu), अत्रि (Atri), वसिष्ठ (Vasishta), विश्वकर्मा (Visvakarma), मय (Maya), नारद (Narada), नन्नजित (Nagnajita), विशालाक्ष (Vishalaksha), पुरंदर (Purandara), ब्रह्मा (Brahma), कुमार (Kumara), नन्दीश (Nandisha), शौनक (Shaunaka), गर्ग (Garga), वासुदेव (Vasudeva), अनिरुद्ध (Anirudha), शुक्र (Shukra), बृहस्पती (Bruhspati)

SENSITIVE POINTS

मर्मशूलं च यत्नेन वर्जयेद् वास्तुकोविदः ।
सूत्रादीनां गृहाङ्गैश्च पीडा चेत् सर्वनाशनम् ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सूत्रादीनि विवर्जयेत् ।
(मयमतम्)



SENSITIVE POINTS IN VASTU PURUSH MANDAL

**Total 79 sensitive points in 81 division structure.
Out of this, six (6) are known as main sensitive
points (shan mahanti)**

**Nine(9) sensitive points are major (Maha marma)
Sixty four (64) sub sensitive points (upa marma).
We must avoid construction above all these
sensitive points. If sensitive points are affected by
the column or walls then the feel good factor of
the building is lost.**

Marmas

In ancient Vedic times, marma points were called bindu – a dot, secret dot or mystic point

Sanskrit origin word ‘mri’ meaning death

Marma in Sanskrit means hidden or secret

Marma point is a junction on body where two or more types of tissue meet, such as muscles, veins, bones or joints

Marmas are the vital points in the body where the life force energy is concentrated

Sushruta Samhita describes 107 Marma points in body

Five Basic Categories of Marma Points

Mamsa Marma(Muscles) 11 Points

Asthi Marma (Bones) 8Points

Snayu Marma (Tendons &ligamants) 27 Points

Sandhi Marma(Joints) 20 Points

Shira Marma(Nerves,Veins&Arteries) 41 Points

ROLE OF MARMA

It creates physical, mental and emotional flexibility

Marma points induces the flow of vital energy (prana) along a complex system of subtle channels called (nadis)

तान्यशुचिभाण्डकीलस्तम्भा द्यैः पीडितानि शल्यैश्च ।
गृहभर्तुल्ये पीडामङ्गे प्रयच्छन्ति ॥५८॥

(Chapter Bruhat Samhita Ch.8)

The Sensitive points of Vaastu Purusha if got hurt by any inauspicious material, it may cause troublesome to the owner of Vaastu in the concern limbs of Vaastu Purusha Mandala

वास्तु पुरुष के संवेदनशील बिंदु अगर किसी भी अशुभ वस्तु से प्रभावित होती है, तो वास्तु पुरुष मंडल के अनुसार उसी अंग में घर के स्वामी को भी परेशानी हो सकती है

PANCHSHIRSH STHAPNA

सिंहमातंगमहिषकूर्मसूकरमस्तकम्
शुद्धहाटकवलृप्तं स्यात कर्तु गहस्य वृष्टिदम ॥२४॥

(Vaastu Vidya)



N



W

E

S

नं.	संज्ञा	नक्षत्रे	कार्य
१)	उङ्घर्वमुख	रेहिणी, आर्द्धा, पृथ्वी, श्रवण, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, धनिष्ठा, शततारका, उत्तरा भाद्रपदा	गृहनिर्माण, मंझील चढ़ाना, शिखर चढ़ाना, किले का निर्माण, राज्याभिषेक करना
२)	अधोमुख	भरणी, कूनिका, आश्लेषा, मधा, पूर्वफाल्गुनी, विशाखा, मूल, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपदा	नींव खोदना, कुओँ, बोआर का निर्माण, घास काटना
३)	तिर्थकमुख	अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, ऐवती	वाहनसंबंधी सब काम, निमान, क्षेपणाल्लोका परीक्षण, दरवाजे की चौखट बिठाना

२) भूमीचयन

भूमीचयन समाज में के श्रेणीनुसार :

वर्ग / श्रेणी	भूमी का रंग	भूमी का गंध	भूमी की रक्वाद
ब्राह्मण	सफेद	सुंगाधी	मीठी
क्षत्रिय	लाल	रक्तगन्ध	कषाय
वैश्य	पिला	मधुगन्ध	आम्ल
शुद्ध	काला	मद्यगन्ध	तिक्तरस

इसके साथ साथ भूमीचयन भूमी के आकार के अनुसार उसके उत्तर के अनुसार, पेड़ पौधों के अनुसार भी होता है।

(१) तिथि विचार

शुभ तिथि - हितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी,
त्रयोदशी, पूर्णिमा

अशुभ तिथि -

क्र.	अशुभ तिथि	फल
१)	प्रतिपदा	दारिद्र्या
२)	चतुर्थी	धनहानी
३)	अष्टमी	उच्चाटन
४)	नवमी	शास्त्रधात
५)	चतुर्दशी	पुत्र, स्त्री नाश
६)	अमावास्या	राजभय

(४) मासादी विचार

यह धार्मिक कार्यों के लिए उत्तमायण शाख है।

क्र.	ग्रहांश मास	शाख फल
१)	वैशाख	धनपती
२)	श्रावण	पश्चिम वृद्धि
३)	मार्गशीर्ष, पौष	धन, धात्र वृद्धि
४)	फाल्गुन	संपत्ति में वृद्धि

क्र.	अशुभ मास	फल
१)	चैत्र	शोककारक
२)	ज्येष्ठ	मृत्युभय
३)	आषाढ	पशुहानि
४)	भाद्रपद	न्यूनता
५)	आश्विन	झगडा
६)	कात्तिक	नोकरहानी
७)	माघ	अग्निभय

८) काकिणी विचार

अष्टव्याप्रमुखः स्वपंचमपराङ्गिनः स्ववर्गोऽन्यथक् ।

तष्ठः काकिणिका गजेऽर्थिंश्च इमा यस्यधिकाः मोऽर्थदः ॥

- १) अपने अपने वर्ण को दुगुना करके दूसरे की वर्णसंख्या को जोड़कर उसमें आठ का भाग देके जो शेष रहे उसको काकिणी कहते हैं। दोनों की काकिणियों में जिसकी संख्या अधिक हो, वह ऋणी दूसरे को लाभदायक होता है।

उदाहरणार्थः :

ग्राम 'नाव - पुणे - 'प' वर्ण = ६ × २ + २ = १४/८ शेष ६
स्वामी 'नाव - जान्हवी - 'च' वर्ण = ३ × २ + २ = ८/८ शेष ०
यहाँ पुणे की काकिणी ज्यादा है। याने पुणे जान्हवी को लाभदायी है।

- २) गृहस्वामी के वर्ण को दुगुना करके उसमें ग्राम वर्ण को जोड़ो और उसको आठ का भाग देके जो शेष रहे उसको गृहस्वामी की काकिणी कहते हैं।

गृहस्वामी की काकिणी = $\frac{(\text{गृहस्वामी की वर्ण संख्या}) \times २ + (\text{ग्रामवर्ण})}{८}$ = शेष संख्या

ऐसे ही ग्राम की काकिणी निकालते हैं।

जिसकी काकिणी अधिक हो कम काकिणी वालों को फायदा देगा।

उदाहरणार्थ, गृहस्वामी का नाम - रघुनाथ 'य' वर्ण - ७

ग्राम का नाम - 'ओंराबाद 'अ' वर्ण - २

गृहस्वामी की काकिणी = $\frac{(७ \times २) + २}{८} = \frac{१६}{८} = \text{शेष } ७$

ग्राम की काकिणी = $\frac{(२ \times २) + ७}{८} = \text{शेष } २$

यहाँ गृहस्वामी की काकिणी ज्यादा है। याने औरंगाबाद ग्राम रघुनाथके लिए शुभ नहीं है।

१) ग्रामवासविचार

ग्रामवास विचार चक्र

गाव की दिशा	मध्य	पूर्व	आगेरे	दक्षिण	नैऋत्य
वर्ज्यरास	वृषभ, मिथुन, सिंह, मकर	बृश्क	मीन	कन्या	कर्क
वर्ग	-	अ	क	च	ट
गाव की दिशा	पश्चिम	बायाल्य	उत्तर	ईशान्य	
वर्ज्यरास	धनु	तुला	मेष	कुंभ	
वर्ग	त	प	य	श	

- ग्रामवास फल - खुद के नाम की राशि से २, ५, ९, १०, १२ राशीवाले गाव में निवास शुभ हैं।

नामाक्षाद्विद्विस्ताड्कदिभगतो ग्रामः शुभो नान्यथा ॥२०॥

(बृहदास्तुमाला)

AVOID TITHI'S (Day) FOR Commencement of Construction

रविभौमदिने विष्ट्यां व्यतिपातो च वैधृती ।
मासदग्धं वारदग्धं तिथिं षष्ठीं विवर्जयेत् ॥
(विश्वकर्मप्रिकाश)

Avoid **Sunday and Tuesday** as well as Vishti, Vyatipat, Vaidhruti Karan to start the construction of house as well as "house warming ceremony". 4th Chaturthi, 9th Navami , 14 th Chaturdashi and Shashti Tithi also avoided.

६) भूमी पूजा
परोक्षिताया भूवि विद्यनराजं समचयेच्चाप्तिकया समतम्।
क्षेत्राधिपं आषद्विगीशदेवान् पृष्ठेश्च धूपैर्बलिभिः सुखाय ॥१६॥

(बृहद्ब्रह्मास्तुमाला)

उपर बतायी गई सब बातों को ध्यान में रखके भूमि लेनी चाहिये। उसपर वारस्तुनिर्माण से पहले श्रीगणेश तथा भगवती दुर्गा की पूजा करके क्षेत्रपाल तथा आठ दिक्पालों की फल, धूप, बलि आदि से पूजा करनी चाहिये।

Constelations

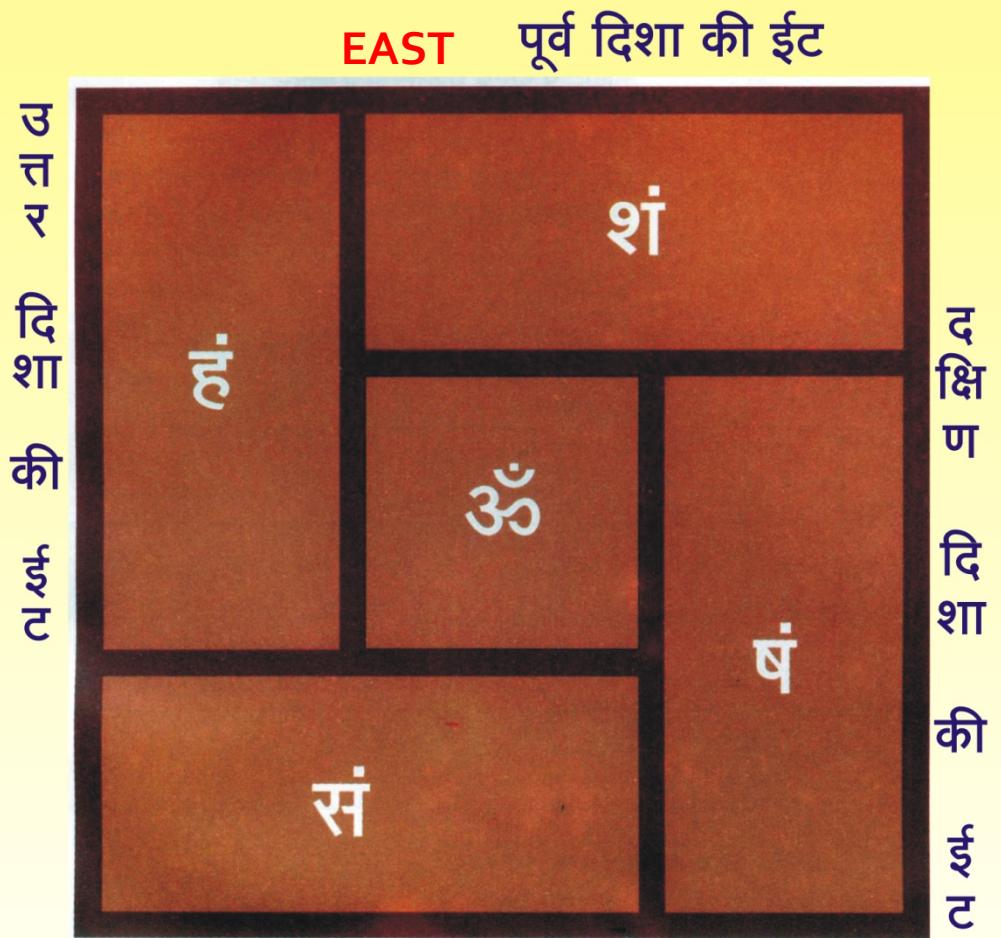
Tiryak	Adho	Urdhva
Ashwini	Bharani	Rohini
Mrug	Kruttikaa	Aaardraa
Punarvasu	Aashleshaa	Pushya
Hasta	Maghaa	Uttaraa
Chitraa	Purvaa	Uttaraashaadha
Swaati	Vishakhaa	Shravan
Anuraadhaa	Mul	Dhanishthaa
Jyeshthaa	Purvaashaadha	Shatataaraka
Revati	Purva Bhaadrapada	Uttara Bhaadrapada

COMMENCEMENT OF CONSTRUCTION

कर्णे प्राग्दक्षिणे नन्दां वास्तुनः स्थापयेदधः ।
अन्याः क्रमेण भद्राद्याः कोणेष्वन्येषु च त्रिषु ॥
(मानसारम्)

The Construction of Walls and pillars should start from the South East corner

NORTH



SOUTH



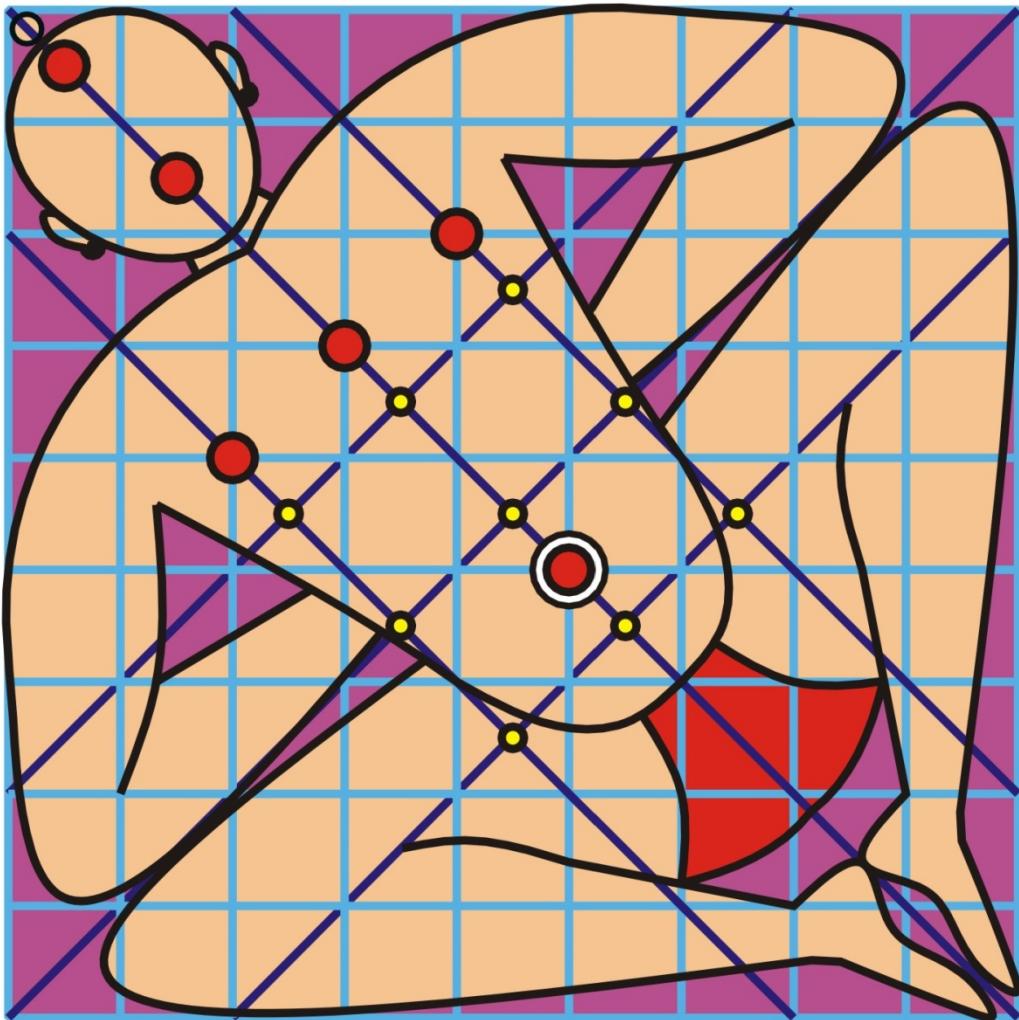








उत्तर



नाभीरथान

गृहारम्भ के नक्षत्र में ही शंकु स्थापन करना चाहिए। ब्राह्मण आदि वर्णों के लिए जो शाकोवन वृक्ष है, उनके काष्ठ का शंकु बनाना चाहिए। ब्राह्मण २४ अङ्गूष्ठ का, क्षत्रिय २० अङ्गूष्ठ का, वैश्य १६ अङ्गूष्ठ का और शूद्र १२ अङ्गूष्ठ का शंकु बनाकर उसे ३ भाग करके प्रथम भाग को चतुष्कोण, द्वितीय का अष्टकोण और तृतीय का चूनाकार बनाकर वास्तुपुरुष के वामकुक्षी भाग में स्थापित करना चाहिए। इसके पश्चात हाथ में सुवर्ण लेकर वास्तुपुरुष के अङ्गों को स्पर्श करना चाहिए। ब्राह्मण - मस्तक, क्षत्रिय - हृदय, वैश्य - जंघा, शूद्र - दोनों पावों को स्पर्श करे। अंगस्पर्श के पश्चात सूत्र की भौंति (अनिकोण से दक्षिण क्रम) रेखा खींचनी चाहिए और रेखानुसार ही भौंति शिला (दीवार) स्थापन करना चाहिए।

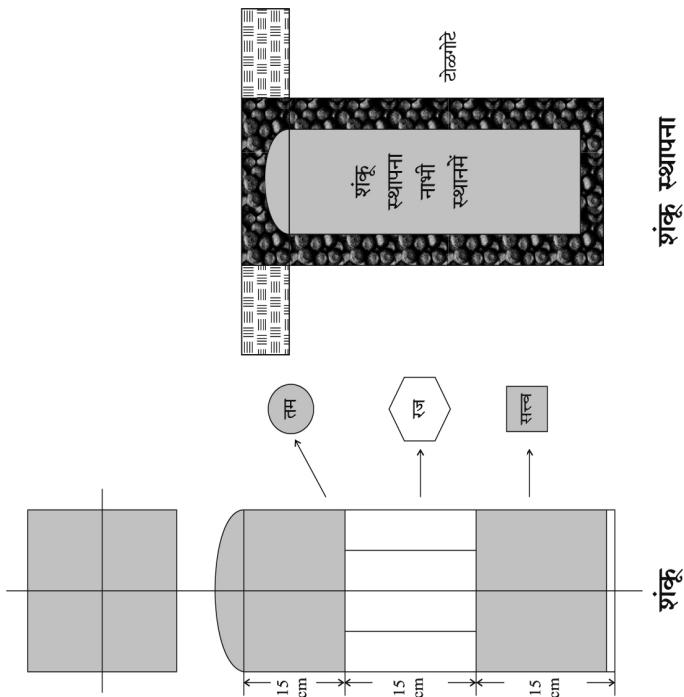
१०) शंकुस्थापन

शंकुस्थापन के लिए मुहूर्त -

- नक्षत्र - मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पृष्ठ,
- अभिजीत, तीनों उत्तरा, रोहिणी रिक्ता तिथि
- वार - रवि, मंगल का दिन,
- अष्टम-स्थान शुद्ध, जन्म लम्घन, जन्म राशि से अष्टम राशि, लग्न के बिना स्थिर लग्न, स्थिरराशि, ५/९/१/४/७/१०/२/३/१२ स्थानों में शुभ ग्रह
- ३/६/१२ में पाप्याह
- १/६/१२ स्थानों से भिन्न स्थानों में चन्द्र पुण्याहवाचनपूर्वक मांगलिक वाद्य घोषों एवं शाकोवन शुभशुक्लों के साथ विप्राशीर्वचनों से शंकु का रोपण शुभ होता है।

लालचन्दन, बिल्ल, खेर, अर्जुन, कदम्ब, सर्ज, शाल, वट, गूलर, आमब देवदार, प्रभृति वृक्षों का १/२ हाथ का नूतन सीधा शंकु होना चाहिए। जो तीन भागों में विभक्त हो (परन्तु अलग न हो)। प्रथम भाग चतुष्कोण, द्वितीय आठ कोण, तृतीय भाग गोल, सूच्यम समान तीक्ष्ण हो। उसे चन्दन, हरिद्रा, पृष्ठ, दब्ल्या, माला, वस्त्र से अलंडकूत करके समन्त्रक वास्तुपुरुष की निर्दिष्ट कुक्षि में स्थापित करे।

काष्ठ	फल
साल	
खैर	
साग	सुखकारक
चंदन	
रक्तचंदन	यशदायी
देवदार	लक्ष्मीकारक
ओंडुबर	मांदिरों के लिए



शंभु स्थापना

(रेखांकन : पं. य. न. मगरिकर)



९) शिलान्त्यास विधी

बृहद्बारतुमालानुसार
दक्षिणपूर्वे कोणे कृत्वा पूजा शिलां न्यसेत् प्रथमम्।
शेषाः प्रदक्षिणोन स्तंभाचैव प्रतिस्थाप्याः ॥१२४॥

कोण की विधिवत पूजा करके पूर्व-दक्षिण के कोण (अग्निकोण) मे प्रथम शिलान्त्यास करके शेष प्रदक्षिणाक्रम से स्थापना करे।

गर्ग ऋषी के मतानुसार ईशान कोण में भी शिलान्त्यास कर सकते हैं। पर कश्यप महर्षि के मत से शिलान्त्यास पूर्व-दक्षिण के मध्य (अग्निकोण) में ही करना चाहिये।

१०) खातनिक्षेप वस्तु

मृदिष्टका - स्वर्ण - रत्न - धान्य - शैवालसंयुतम् ।
ताम्रपत्रास्थितं सर्वं खातमध्ये नियोजयेत् ॥१४३॥

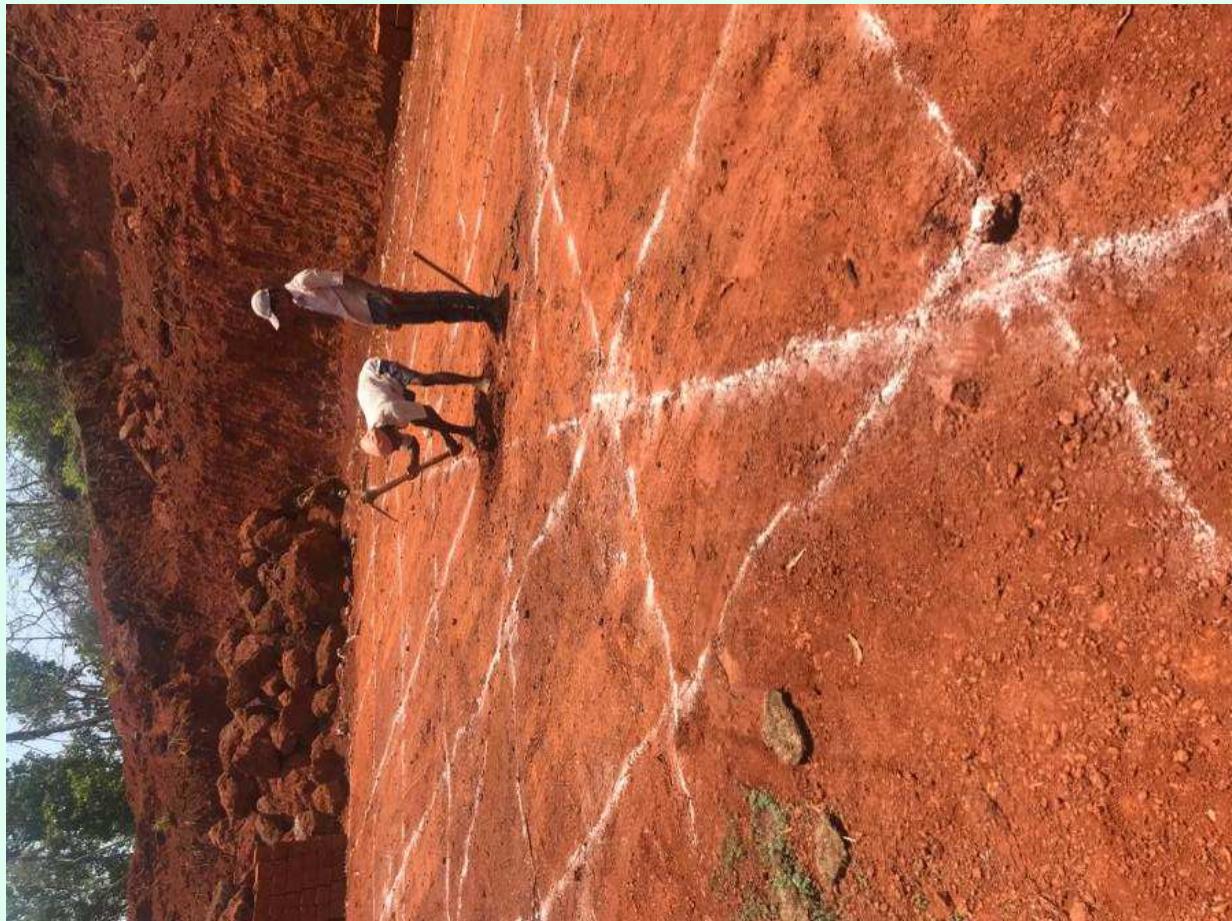
(बृहद्बारतुमाला)

तांबे के बर्तन मे मिट्टी, सोना, ईट, पंचरत्न, सपधान्य, सेवार रखकर फिर दीवार उसपर बनाये।

PLACING OF SHANKU AT NABHISTHAN (NEVAL POINT)

Placement of shanku at neval point of vastu purush mandal is considered auspicious as per muhurta martanda literature. Shanku is made up of wood of khair, arjun, saal, yugapatra, raktachandan, palash, raktashalaki, lalaj, neem, karanja, kuntaja, venu, bilwa etc.

Shanku must be placed in the beginning of the construction of building. It is divided into three parts having 4 inch base and 18 inch height. Base of shanku is square shape (brahma bhag, satva), middle is octagonal (vishnu bhag, raja) and top is cylindrical shape (mahesh bhag, tama).









COMMENCEMENT OF CONSTRUCTION

During the construction of building, placement of pillars should start from southeast corner. It is known as sheelanyas / nanda pratisthapana.

Each pillar should be placed above swastik of four and half brick or copper swastik yantra. Total number of pillars of building should always be even (for example 4,6,8etc).



